प्रकाशन तिथि : 15 अक्टूबर, 2024
प्रेषण तिथि : 19 अक्टूबर, 2024

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 28 | अंक 15 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

रावण रूपी बुराई के अन्त के लिए राम जैसा संकल्प जगाएं: संघप्रमुख श्री

(विभिन्न स्थानों पर शास्त्र व शस्त्र पूजन कार्यक्रमों का आयोजन कर मनाया विजयादशमी का पर्व)

भगवान राम ने रावण का अंत कैसे किया, क्यों किया? 12 वर्ष की उम्र में ही ऋषियों की हड्डियों के ढेर को देखकर जो भगवान राम के भीतर संकल्प जगा था कि मैं इन आततायी राक्षसों का अंत कर दूंगा, उस संकल्प के कारण ही भगवान राम ने रावण का वध किया था। जब तक हमारे भीतर वैसा ही संकल्प नहीं जगता तब तक राक्षसों का, बुराई का अंत नहीं किया जा सकता। रावण रूपी जो कुविचार हैं उनका मर्दन इस प्रकार के संकल्प को जगाकर ही किया जा सकता है। व्यक्तिगत रूप से उस संकल्प को जगाना कठिन है इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ सामूहिक रूप से हमारे संकल्प को जगा रहा है। इसीलिए संघ एक नेता, एक ध्वज, एक विचार, एक मर्यादा की बात करता है। सामूहिक शिक्षण का यह लाभ है कि एक व्यक्ति को कार्य करते देखकर उससे दूसरे को भी कार्य करने की प्रेरणा मिलती है, उसका भी संकल्प जगता है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने 12 अक्टूबर को जयपुर के सांगानेर क्षेत्र में स्थित जीआर इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल में विजयादशमी के उपलक्ष्य में आयोजित शास्त्र व शस्त्र पूजन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि सामान्यतया दशहरे के कार्यक्रम में रावण दहन, आतिशबाजी जैसे आयोजन होते हैं लेकिन आज का यह कार्यक्रम अनूठा है, जहां यह केसरिया ध्वज फहरा रहा है। आपको यह भी कहा गया कि जहां तक संभव हो केसरिया पगड़ी पहन कर आएं, मातृशक्ति से भी केसरिया ओढ़नी ओढ़ कर आने का निवेदन किया गया। इस रूप में दशहरा का कार्यक्रम आपने पहली बार देखा होगा। विजयादशमी के पर्व के पीछे क्या प्रेरणा है, क्या इतिहास है, उसे जानने का प्रयास यदि हम करेंगे तो हमें इस केसरिया ध्वज, इस केसरिया पगड़ी और इस केसरिया ओढ़नी का महत्व भी समझ में आएगा। हम जानते हैं कि रावण द्वारा सीता का हरण करने पर भगवान राम द्वारा रावण से युद्ध करके उसका वध किया गया और इसीलिए विजयादशमी मनाई जाती है। लेकिन लाखों वर्ष पूर्व हुई इस घटना को लेकर हम आज भी यह पर्व क्यों मना रहे हैं इस पर हमें विचार करना चाहिए। रावण किसका प्रतीक है? रावण हमारे भीतर बैठी बुराई का प्रतीक है। हम हर वर्ष रावण को क्यों जलाते हैं? क्योंकि बुराई रूपी यह रावण समाप्त नहीं हो रहा है बल्कि उसकी संख्या और उसकी सामर्थ्य में निरंतर वृद्धि हो रही है। भगवान राम रावण को अकेले भी समाप्त करने में समर्थ थे, उन्हें किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं थी लेकिन फिर भी उन्होंने वानर, भालुओं और आदिवासियों की सेना बनाकर सामूहिक शक्ति का निर्माण किया और उस सामूहिक शक्ति से रावण को परास्त किया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

उत्साहपूर्वक मनाई महाराजा हरिसिंह जी की जयंती

जम्मू कश्मीर रियासत के अंतिम डोगरा शासक महाराज हरि सिंह जी की 130वीं जयंती 23 सितंबर को विभिन्न स्थानों पर समारोहपूर्वक मनाई गई। जम्मू शहर में युवा राजपूत सभा के तत्वावधान में जयंती के उपलक्ष में विशाल वाहन रैली का आयोजन किया गया। बंटालाब से तवी पुल तक 10 किमी दूरी तय कर-के रैली महाराजा हरि सिंह पार्क पहुंची जहां सभी ने महाराजा की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

समारोहपूर्वक मनाई राणा पूंजा जी सोलंकी की जयंती

5 अक्टूबर को महाराणा प्रताप के सहयोगी एवं मेवाड़ के स्वतंत्रता संघर्ष में आदिवासियों का नेतृत्व करने वाले पानरवा के सोलंकी वंश के शासक राणा पूंजा की जयंती विभिन्न स्थानों पर उत्साह पूर्वक मनाई गई। उदयपुर जिले के झाड़ोल उपखंड के पानरवा गांव, जो पूंजा जी की जन्मस्थली है, में उनकी जयंती के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन किया गया। राणा पूंजा विकास एवं इतिहास शोध समिति के तत्वावधान में पानरवा सोलंकी राजवंश एवं सर्व समाज पानरवा के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में राजपूत समाज की प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया गया। राणा पूंजा के वंशज मनोहर सिंह सोलंकी, सीताराम महाराज, राजस्थान सरकार में जनजाति विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष अशोक सिंह मेतवाला, जौहर स्मृति संस्थान की उपाध्यक्ष निर्मला कंवर सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सभी वक्ताओं ने पूंजा जी के संघर्ष, त्याग और बलिदान को नमन करते हुए कहा कि पूंजा जी सोलंकी ने महाराणा प्रताप द्वारा मातृभूमि के स्वाभिमान की रक्षा के लिए किए जा रहे संघर्ष में आदिवासियों का नेतृत्व करते हुए सहयोग किया। उनका व्यक्तित्व राजपूत व आदिवासी एकता का परिचायक है। कार्यक्रम के दौरान युवकों एवं युवतियों द्वारा शस्त्र कला का भी प्रदर्शन किया गया। जैसलमेर जिले के रामगढ़ में स्थित श्री राजपूत छात्रावास में भी श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा राणा पूंजा की जयंती मनाई गई जिसमें छात्रावास के विद्यार्थियो ने राणा पूंजा सोलंकी की तस्वीर के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित की। प्रांत प्रमुख पदम सिंह रामगढ़ ने राणा पूंजा का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान में कुछ राजनीतिक एवं स्वार्थी तत्वों द्वारा हमारे इतिहास का विकृतिकरण किया जा रहा है जिसे रोकने के लिए हमें अपने सही इतिहास को आगे लाना होगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गजसिंह का गांव, मालजीभी पिपरिया एवं थोरड़ी में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

जैसलमेर संभाग के झिझनियाली प्रांत के गज सिंह का गांव में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 1 से 4 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। पदम सिंह रामगढ़ ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे जीवन को निखारने का कार्य करता है। यह सतत प्रक्रिया है जो निरंतर अभ्यास की मांग करती है। इसलिए बाधाओं से बिना विचलित हुए जो अडिग रहता है वही संघ की राह पर खरा उतर पाता है। उन्होंने कहा कि आप अपनी जीवनचर्या को व्यवस्थित बनाएं जिससे आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकें। आप अपने पात्र को सदैव खुला रखें जिससे संघ का शिक्षण भीतर उतरकर आपके आचरण का अंग बन जाए। क्षत्रिय का जीवन मर्यादित होता है और वह अपने आचरण के द्वारा ही पहचाना जाता है। हमारे संस्कार व कुल परंपरा ही हमारी पहचान है, जिसे हमें सुरक्षित रखना है। शिविर में मोढ़ा, देवड़ा, तेजमालता, रणधा, जोगीदास का गांव, भाडली, कुंडा, झिझनियाली, बईया, सिहड़ार, गज सिंह का गांव, सोनू, रामगढ़, नगा, पारेवर, पूनमनगर, सलखा, धोबा, गेराजा, अगासड़ी, सिपला, बीदा, मसूरिया, म्याजलार, बैरसियाला, नरसिंगो की ढाणी, मुलाना आदि गांवों एवं गायत्री शिक्षण संस्थान लखा के 240 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विदाई कार्यक्रम में केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के हालार प्रांत में स्थित मालजीभी पिपरिया गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 28 से 30 सितंबर तक आयोजित हुआ। भागीरथ सिंह सांढखाखरा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि आप सब भाग्यशाली हैं जिससे आपको श्री क्षत्रिय युवक संघ के इस शिविर में आकर क्षत्रिय के सच्चे अर्थ को जानने का अवसर प्राप्त हुआ है। यहां छोटी-छोटी बातों में जो शिक्षण आपको दिया जा रहा है उसका पालन करने से आपके जीवन में क्षत्रियत्व जागृत हो सकता है। वर्तमान समय में ऐसा शिक्षण हमें अन्यत्र कहीं भी नहीं मिल रहा है। इसलिए इस अमूल्य अवसर को व्यर्थ नहीं जाने दें और पूज्य श्री तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में जो जीवन दर्शन हमें दिया है उसे आत्मसात करने का प्रयत्न करें। शिविर में पिपरिया, चारेल, सतोदड़, शीशांग, तरकासर आदि गांवों के 118 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान युवाओं द्वारा तलवार रास एवं गरबा भी खेला गया। शक्ति सिंह कोटड़ा नायानी एवं कृपाल सिंह लुनिवाव ने समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का दायित्व संभाला। हालार प्रांत के ही थोरड़ी गांव में भी इसी अवधि में मातृशक्ति प्राथमिक प्रशिक्षण संपन्न हुआ। कल्पना बा वावड़ी ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि माता परिवार की धुरी होती है। उसके व्यवहार पर ही पूरे परिवार का वातावरण निर्भर करता है। संतान के चरित्र का निर्माण माता द्वारा प्रारंभिक काल में दिए गए संस्कारों पर ही निर्भर करता है। संस्कारित माताओं के माध्यम से ही एक संस्कारित समाज का निर्माण किया जा सकता है इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ बालिकाओं में संस्कार निर्माण के लिए इन शिविरों का आयोजन कर रहा है क्योंकि आज की बालिका ही कल माता का भी दायित्व निभाएगी। उन्होंने कहा कि हमें परिवार और समाज के प्रति अपने दायित्व को समझना होगा और उस दायित्व के निर्वाह के लिए त्याग का मार्ग अपनाने के लिए तैयार रहना होगा। संघ के इन शिविरों में हमें उसी त्याग का अभ्यास कराया जा रहा है। शिविर में थोरड़ी, गुदी, अवाणियां आदि गांवों से 58 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया।

चित्तौड़गढ़ व कच्छ में बाल शिविरों का आयोजन

चित्तौड़गढ़ स्थित भूपाल राजपूत छात्रावास में कक्षा तीन से पांच तक के बालकों का दो दिवसीय बाल शिविर 2 से 3 अक्टूबर तक संपन्न हुआ। सूर्यकरण सिंह आकोलागढ़ ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने बालकों के सामने पूज्य तनसिंह जी का जीवन परिचय रखते हुए समाज के प्रति उनके अपनत्व के भाव के बारे में बताया। शिविर में चित्तौड़गढ़ शहर के 70 बालकों ने प्रशिक्षण लिया। चित्तौड़गढ़ स्थित जौहर भवन में बालिकाओं का दो दिवसीय बाल शिविर भी इसी अवधि में आयोजित हुआ। श्री क्षत्रिय युवक

संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली के निर्देशन में मीना कंवर चाकूड़ा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने बालिकाओं को माता सीता, मीराबाई, हाड़ी रानी की कहानियां बताते हुए क्षत्रिय संस्कृति एवं परंपरा की महानता से परिचित कराया। शिविर में 60 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। गुजरात में कच्छ जिले की मुंद्रा तहसील के मोटी भुजपर गांव में भी श्री क्षत्रिय युवक संघ का एक दिवसीय बाल शिविर 6 अक्टूबर को संपन्न हुआ। छत्रपाल सिंह ओरूमाणा के संचालन में इस शिविर में 61 बालकों ने संघ का प्राथमिक परिचय प्राप्त किया।

चांधन प्रांत की शाखाओं का सामूहिक भ्रमण कार्यक्रम संपन्न

जैसलमेर संभाग के चांधन प्रान्त की बडोड़ा गाँव, मूलाना व डेलासर की शाखाओं के स्वयंसेवकों का सामूहिक भ्रमण कार्यक्रम 6 अक्टूबर को आयोजित हुआ। सर्वप्रथम सभी जैसलमेर स्थित सोनार दुर्ग पहुंचे तथा दुर्ग के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों का अवलोकन किया। जैसलमेर दुर्ग के प्रथम शाके के नायक मूलराज प्रथम व रतन सिंह के जुंझार चबूतरे तथा दुर्ग के सामने स्थित द्वितीय शाके के योद्धा दूदा-तिलोकसी की छतरियों पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। तत्पश्चात दुर्ग स्थित संग्रहालय, दशहरा चौक, सतियों के पागोथियों, जेसलू कुआं व लक्ष्मीनाथ जी के मंदिर के भी दर्शन किए। यहां से सभी श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागीय कार्यालय तनाश्रम पहुंचे जहां दोपहर के भोजन के बाद वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया के निर्देशन में सामूहिक यज्ञ एवं पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखित होनहार के खेल कहानी का पठन किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बैरसियाला भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसके पश्चात भ्रमण दल छत्रपति आल्हाजी के मंदिर पहुंचा एवं बड़े बाग की छतरियों के भ्रमण के बाद रामकुंडा में दर्शन लाभ लिया। यहां से हिंगलाज माता के मंदिर पहुंचकर दर्शन किए व मूमल की मेड़ी व जैन मंदिरों का भ्रमण किया। चूंधी गणेश में दर्शन के दौरान 'उतर भड़ किंवाड़' कहानी का पठन किया गया। प्रान्त प्रमुख उम्मेद सिंह बडोड़ा गाँव, स्वरूप सिंह मूलाना, स्वरूप सिंह दवाड़ा, स्वरूप सिंह डेलासर, प्रताप सिंह बडोड़ा गाँव व रणवीर सिंह आशायच अन्य सहयोगियों सहित यात्रा में उपस्थित रहे। यात्रा के दौरान रतन सिंह बडोड़ा गांव ने भ्रमण किए गए स्थानों के ऐतिहासिक महत्त्व के बारे में विस्तार से बताया।

काणेटी (अहमदाबाद) में एक दिवसीय स्नेहमिलन संपन्न

मध्य गुजरात संभाग के काणेटी गांव में स्थित प्राथमिक शाला में श्री क्षत्रिय युवक संघ का एक दिवसीय स्नेहमिलन कार्यक्रम 02 अक्टूबर को आयोजित हुआ। सामूहिक यज्ञ के साथ प्रारंभ हुए कार्यक्रम में प्रथम सत्र में सभी के द्वारा आपसी परिचय किया गया एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य एवं कार्य प्रणाली की विस्तृत जानकारी उपस्थित समाजबंधुओ को दी गई। द्वितीय सत्र में शाखा एवं शिविर के संबंध में चर्चा की गई। तृतीय सत्र में संभाग के विभिन्न गांवों में नई शाखाएं प्रारंभ करने पर चर्चा

की गई। कार्यक्रम में काणेटी, साणंद, पींपण, मोडासर, रासम, पलवाडा, खोड़ा, धोलका, कौंका, वड़ोद, आणंद, शिहोर, गांधीनगर, अहमदाबाद शहर, पडूस्मा, मोडासा, भेंसाणा आदि स्थानों से समाजबंधु शामिल हुए। केंद्रीय कार्यकारी दीवान सिंह काणेटी, मध्य गुजरात संभाग प्रमुख बटुक सिंह काणेटी एवं उत्तर गुजरात संभाग प्रमुख वनराज सिंह भेंसाणा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय राजपूत परिषद ने फरीदाबाद में मनाई विजयादशमी

राष्ट्रीय राजपूत परिषद के तत्वावधान में 6 अक्टूबर को विजयादशमी के उपलक्ष में फरीदाबाद की इंद्रप्रस्थ कॉलोनी में स्थित संस्था के कार्यालय में शस्त्र पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारत के विभिन्न राज्यों से राष्ट्रीय राजपूत परिषद के प्रभारी तथा राजपूत समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। संस्था के राष्ट्रीय संयोजक एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष तिलकराज चौहान ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राजपूतों का जन्म तो समाज और देश की रक्षा के लिए ही होता है। शस्त्र और क्षत्रिय एक दूसरे के पूरक हैं। शस्त्र के बिना राजपूत अधूरा है। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष गजेंद्र सिंह चौहान ने कहा कि राजपूतों को संगठित होकर समाज के हित के लिए कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने संगठन के महत्व को समझाते हुए कहा कि हमें आपसी मतभेदों को समाप्त करके पारस्परिक प्रेम, सद्भाव, भाईचारे, आपसी सहमति एवं एकजुटता को बढ़ावा देकर राजपूत समाज की संस्कृति, विरासत तथा इतिहास की रक्षा करनी चाहिए। कार्यक्रम में संरक्षक के.एस. भाटी, वी के चौहान, प्रवीण चौहान, सूरजपाल भाटी, देवेंद्र सिंह राणा, आर के राणा, धीर सिंह चौहान, विनोद कुमार तोमर, शशि भूषण सिंह पटना बिहार, प्रमोद चौहान नोएडा, अंशुमन शेखावत झुंझुनू, राजेंद्र सिंह चौहान रेवाडी, उमेश भाटी, प्रताप भाटी बल्लभगढ़, नीरज चौहान नोएडा, अनिल चौहान, दिनेश भाटी नोएडा सहित उत्तरप्रदेश, दिल्ली, राजस्थान व हरियाणा के अनेकों समाजबंधु शामिल हुए। राष्ट्रीय महासचिव प्रवीण चौहान ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

समारोहपूर्वक मनाई वीर पनराज जी की जयंती

जैसलमेर जिले के तेजपाला गांव में स्थित पनराज जी के धाम में 10 अक्टूबर को वीर पनराज जी की जयंती पनराज सेवा समिति के तत्वावधान में समारोह पूर्वक मनाई गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में समाज जिस स्थिति से गुजर रहा है उसमें पनराज जी जैसे निस्वार्थी और पुरुषार्थी व्यक्तित्व तैयार करने की आवश्यकता है। संघ यही कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि युवाओं की ऊर्जा को सद्मार्ग पर लगाने हेतु उन्हें संस्कारित करना आवश्यक है। इसलिए अपने बच्चों को संघ की शाखाओं व शिविरों में जाने के लिए प्रेरित करें। हीर सिंह रणधा ने शिक्षा को महत्व देने एवं कुरीतियों को त्यागने की बात कही। गोवर्धन सिंह अर्जुना ने युवाओं से समाज निर्माण में सक्रिय सहयोगी बनने का आह्वान किया। विक्रम सिंह नाचना एवं तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने भी अपने विचार रखते हुए पनराज जी के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। महंत बाल भारती ने भी आर्शीवचन प्रदान किया। मोती सिंह तेजपाला ने पनराज जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया एवं दीप सिंह रणधा ने पनराज जी की स्तुति में छंद का वाचन किया। मोती सिंह तेजपाला और पदम सिंह रामगढ़ ने कार्यक्रम का संचालन किया। समारोह में खड़ाल क्षेत्र के अलावा जैसलमेर के विभिन्न परगनों से समाजबंधु सम्मिलित हुए। 10 अक्टूबर को ही पनराज जी की जयंती जैसलमेर शहर में स्थित सुली डूंगर देवल पर भी मनाई गई। इस अवसर पर सामूहिक यज्ञ एवं प्रसादी का आयोजन हुआ। भंवर सिंह साधना ने पनराज जी का जीवन परिचय देते हुए बताया कि पनराज जी के शौर्य, त्याग, भक्ति और सत्यनिष्ठा हम सभी के लिए प्रेरणादायी व अनुकरणीय हैं। उनके दिखाए मार्ग पर चलना ही ऐसे देवपुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। हिंदू सिंह म्याजलार ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा पिछले कई वर्षों से जैसलमेर जिले के क्षत्रिय महापुरुषों की जयंती मनाने का अभियान चलाया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी को अपने पूर्वजों की भांति स्वधर्म पालन की प्रेरणा मिले और हमारे ऐतिहासिक स्थलों को यथोचित महत्त्व मिले। इस अवसर पर अनेकों समाजबंधुओं ने उपस्थित रहकर पनराज जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

राजनोता (कोटपूतली) में सत्ताईसा राजपूत समाज की बैठक संपन्न

कोटपूतली क्षेत्र के राजनोता गांव में 6 अक्टूबर को सत्ताईसा राजपूत समाज की बैठक आयोजित हुई जिसमें राजनोता, भींवजी, लुनाजी, कैरोड़ी और संतोषी ग्राम इकाइयों ने सहभागिता की। बैठक में समाज के व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन, शिक्षा व रोजगार को लेकर जागृति लाने, आपसी एकता को सुदृढ़ करने आदि विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। अमरसर में आयोजित होने वाले शेखा जी जयंती एवं विजयादशमी समारोह में अधिकाधिक संख्या में पहुंचने का भी निर्णय किया गया। दशरथ सिंह ने बैठक की अध्यक्षता की।

काणेटी में मनाई श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की 104वीं जयंती

श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघप्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की 104वीं जयंती भारतीय पंचांग अनुसार आसोज सुद पंचमी को मध्य गुजरात संभाग के काणेटी गांव में मनाई गई। सामूहिक यज्ञ के साथ प्रारंभ कार्यक्रम में सभी ने हुडील की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट की। मध्य गुजरात संभाग प्रमुख बटुकसिंह काणेटी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

मोटा बंदरा (कच्छ) में एक दिवसीय शाखा प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

गोहिलवाड़ संभाग के कच्छ जिले में श्री क्षत्रिय युवक संघ की एक दिवसीय शाखा प्रशिक्षण कार्यशाला 29 सितंबर को श्री भेड (मोमाई) माताजी मंदिर, मोटा बंदरा, भुज में आयोजित हुई। कार्यशाला में कच्छ जिले की 10 शाखाओं के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यशाला में स्वयंसेवकों को शाखा के विभिन्न घटकों के बारे में विस्तार से समझाया गया एवं निर्देशिका में वर्णित निर्देशों के अर्थ को समझाते हुए उनके पालन का अभ्यास कराया गया। संघ साहित्य का परिचय भी प्रशिक्षुओं को दिया गया। कार्यशाला के दौरान कच्छ क्षेत्र में संघ कार्य के विस्तार पर भी चर्चा की गई एवं आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई गई। राजेन्द्र सिंह मोरचंद ओर वीरेंद्र सिंह एशवाणा ने कार्यशाला का संचालन किया।

महाराणा प्रताप क्षत्रिय संस्थान का 39वां स्थापना दिवस मनाया

महाराणा प्रताप क्षत्रिय संस्थान फतहनगर-सनवाड़ का 39वां स्थापना दिवस 28 सितंबर को फतहनगर (उदयपुर) में मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षा एवं खेल के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले समाज के विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया गया। विद्या प्रचारिणी सभा उदयपुर के प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह रूपा खेड़ी, महंत बजरंगदास जी महाराज अखाड़ा मंदिर आकोला, जीत सिंह चुंडावत (पूर्व प्रधान मावली), चंद्र सिंह आंजणा, चतर सिंह राजावत, भोमसिंह चुंडावत सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मंच संचालन प्रहलाद सिंह व महेंद्र सिंह झाला ने किया। संस्थान के अध्यक्ष पर्वत सिंह नया बंगला ने सभी का आभार व्यक्त किया।

संपादकीय

संकल्प की दृढ़ता का आधार : शुद्ध विवेक

समाज संबंधी विमर्श में अनेक लोगों द्वारा बहुधा यह बात प्रकट की जाती है कि समाज के नाम पर अनेक व्यक्तियों अथवा समूहों द्वारा केवल अपने स्वार्थ साधे जाते हैं, युवाओं की समाज के प्रति भावनाओं का दोहन करके आर्थिक और राजनीतिक लाभ उठाए जाते हैं और समाज की शक्ति का उपयोग व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए कर लिया जाता है। यह बात निराधार नहीं है और निःसंदेह ऐसा होता है। केवल समाज के संबंध में ही नहीं बल्कि राष्ट्र, धर्म आदि के संबंध में भी यही सत्य है किंतु हम समाज को केंद्र में रखकर चिंतन करें तो पाएंगे कि समाज के नाम पर व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति की उपरोक्त प्रचलित मान्यता में दो महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं जिनकी पहचान और विश्लेषण से सामाजिक विमर्श एवं चिंतन में महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हो सकता है। पहला तथ्य है समाज में सामाजिक भाव की प्रचुरता। समाज के नाम पर व्यक्तिगत स्वार्थ साधना निश्चित रूप से निकृष्ट बात है लेकिन उन निकृष्ट लोगों के लिए भी यह संभव केवल इसलिए हो पाता है कि हमारे समाज में सामाजिक भाव प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। समाज के प्रति हमारी अपनत्व की भावना प्रबल है इसीलिए उस भावना को भड़का कर महत्वाकांक्षी और राजनीतिक व्यक्ति अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। समाज में सामाजिक भावना की व्यापक और निरंतर उपस्थिति इससे स्पष्ट होती है। दूसरा तथ्य, जो समाज के नाम पर व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति की मान्यता में निहित है, वह है - उक्त सामाजिक भाव का निराशा में परिणत होना। हमारा समाज के प्रति अपनत्व का भाव जब व्यक्तिगत और राजनीतिक स्वार्थों से प्रेरित व्यक्तियों द्वारा समाज की सेवा के नाम पर ठग लिया जाता है तो वह सामाजिक भाव आहत होकर निराश हो बैठता है। निराशा के इसी अनुभव के कारण समाज संबंधी विमर्श में बार-बार यह बात अभिव्यक्त होती है कि समाज के नाम पर अधिकांशतया केवल व्यक्तिगत स्वार्थ और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का ही प्रयत्न होता दिखाई पड़ता है। यहां यह समझना आवश्यक है कि व्यक्तिगत स्वार्थ और महत्वाकांक्षा के प्रतिनिधि हमारे सामाजिक भाव के दोहन के लिए सदैव तैयार ही रहेंगे और एक के जाने पर भी अन्यों द्वारा उस स्थान की पूर्ति तुरंत कर ली जाएगी। इसलिए हमारे चिंतन का विषय व्यक्तिगत स्वार्थ और महत्वाकांक्षा के प्रतिनिधियों की उपस्थिति नहीं बल्कि सामाजिक भाव की प्रचुरता और उसकी निराशा में परिणति के तथ्य होने चाहिए।

हम यदि सामाजिक क्षेत्र में होने वाली चचाओं और गतिविधियों पर दृष्टिपात करें तो हमें उक्त दोनों तथ्य स्पष्टता से दिखाई पड़ जाएंगे। समाज को प्रभावित करने वाले विभिन्न मुद्दों पर समाज का उद्वेलित होना और प्रतिक्रिया देना, छोटी-बड़ी बहुसंख्यक सामाजिक संस्थाओं की उपस्थिति, इतिहास जैसी हमारी साझा सामाजिक विरासत पर होने वाले आक्रमणों के विरुद्ध सामूहिक आक्रोश जैसे अनेकों ऐसे उदाहरण हैं जो हमारे सामाजिक भाव की प्रबलता और प्रचुरता को प्रमाणित करते हैं। समाज जागरण के उद्देश्य को लेकर लोकसंग्रह का कार्य करने वाले के लिए सामाजिक भाव की यह प्रचुरता उसमें आशा और उत्साह का संचार करने वाला तथ्य है। दूसरी ओर हमें ऐसे भी अनेकों उदाहरण मिल जाएंगे जहां यह सामाजिक भाव निराशा में परिणत हो गया है और ऐसा होने पर यह निराशा या तो व्यक्ति को निष्क्रिय और पलायनवादी बना देती है अथवा इस निराशा की अभिव्यक्ति समाज को ही दोषी बताने जैसी नकारात्मकता के रूप में होती दिखाई पड़ जाएगी। सामाजिक भाव की यह परिणति दुखद है और इसलिए इसके कारणों और इससे बचने के उपायों पर चिंतन कर लेना भी आवश्यक है। सामाजिक भाव के निराश होने का मूल कारण है - हमारे संकल्प का निर्बल होना। समाज के प्रति हमारे अन्तर में किसी संकल्प के जागरण से ही हमारा सामाजिक भाव सक्रिय होता है। जब तक वह संकल्प जागृत रहता है तब तक वह हमें कर्मशील बनाए रखता है और जब तक हम कर्मशील बने रहते हैं तब तक निराशा हमारे जीवन में नहीं आ सकती। लेकिन जब हमारा संकल्प निर्बल हो जाता है तब हमारी कर्मठता का स्थान निराशा ले लेती है। संकल्प की यह निर्बलता और क्षीणता अधिकांश व्यक्तियों के जीवन में आती है और इसका कारण यह है कि उस संकल्प की स्थापना विवेक के ठोस धरातल पर नहीं की गई थी। समाज के प्रति हमारे संकल्प के जागरण के समय यदि हमारा विवेक स्थिर और जागृत रहा होता तो समाज की विराटता और उसकी तुलना में अपनी अकिंचिनता का हमें भान अवश्य होता। ऐसा होने पर हमें समाज जागरण के कार्य की दुरूहता, उसमें आने वाली बाधाओं और चुनौतियों, उनसे संघर्ष के लिए सामूहिक और संगठित शक्ति की आवश्यकता आदि का भी अनुभव होता और तब हमारा संकल्प केवल क्षणिक भावुकता पर नहीं बल्कि स्थिर विवेक के सुदृढ़ धरातल पर स्थापित होता। ऐसा संकल्प ही सदैव जागृत रहकर हमें निरंतर कर्मशील बनाए रख सकता है और हमारे सामाजिक भाव को निराश और नकारात्मक बनने से बचा सकता है।

इसलिए हमें समाज के प्रति अपने संकल्प का परीक्षण अवश्य कर लेना चाहिए कि वह संकल्प विवेक के सुदृढ़ धरातल पर खड़ा है अथवा नहीं, अन्यथा न तो हमारे सामाजिक भाव को व्यक्तिगत स्वार्थ और महत्वाकांक्षाओं की भेंट चढ़ने से बचाया जा सकता है और न ही उसे निष्क्रियता अथवा नकारात्मकता का शिकार होने से हम लंबे समय तक बचा सकेंगे। निर्बल और अस्थिर संकल्प से किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती। पूज्य श्री तनसिंह जी ने लिखा है कि - 'संकल्प की गरीबी, चरित्र की गरीबी है।' अतः अपने संकल्प को उत्तरोत्तर प्रबल बनाने के लिए उसे विवेकपूर्ण चिंतन का समर्थन निरंतर प्रदान करते रहना चाहिए। यदि पूर्व में किए गए अविवेकपूर्ण संकल्प के निर्बल होने पर हमारे भीतर निराशा और निष्क्रियता आ भी गई है तो भी हमें नवीन संकल्प को जागृत करके उसे विवेक का आधार प्रदान करना चाहिए। शुद्ध विवेक ही हमें लक्ष्य और मार्ग की स्पष्टता प्रदान कर सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का दर्शन हमारे भीतर इसी शुद्ध विवेक को विकसित करता है और यहां का सामूहिक व सहयोगी जीवन का अभ्यास समाज के प्रति हमारे संकल्प और सामाजिक भाव को प्रबल बनाता है।

मेवाड़ का गुहिल वंश

मेदिनीराय द्वारा महमुद को पुनः मांडू का शासक बनाने के बाद मेदिनीराय के बढ़ते प्रभाव से महमुद के अमीरों के मन में ईर्ष्या व भय का भाव उत्पन्न हो गया। विपक्षी अमीरों ने दिल्ली सुल्तान सिकन्दर लोदी व गुजरात के सुल्तान मुजफ्फर से सैन्य सहायता मांगी की महमुद तो मालवा का नाम का शासक है, वास्तविक शासक तो हिन्दू मेदिनीराय है। अमीरों का नेता साहिब खां था जिसके सहयोग के लिए सिकन्दर लोदी ने 12000 सेना भेजी जबकि गुजरात का मुजफ्फर स्वयं सेना सहित आया। मेदिनीराय ने अपने पराक्रम से इन सभी की सम्मिलित सैन्य शक्ति पर विजय प्राप्त की और मालवा में महमुद के राज्य को स्थिर किया। पराजित और निराश अमीरों ने मेदिनीराय के विरुद्ध सुल्तान महमुद को भड़काने का प्रयास शुरू किया, धीरे-धीरे वो इस कार्य में इतना सफल हो गए जिससे सुल्तान ने मेदिनीराय को मरवाने का षड्यंत्र रचा। मेदिनीराय उस षड्यंत्र से बच गए और सुल्तान से सचेत रहने लगे। अब उनके साथ हर वक्त 500 राजपूत साथ रहने लगे। इससे भयभीत सुल्तान महमुद मांडू छोड़कर गुजरात भाग गया। मेदिनीराय मांडू की रक्षा का दायित्व अपने पुत्र को सौंपकर महाराणा सांगा के पास चित्तौड़ गए जहां महाराणा ने उन्हें गागरोण, चंदेरी की जागीर दी। उधर गुजरात के सैन्य सहयोग से सुल्तान महमुद ने मांडू पर आक्रमण किया। मेदिनीराय का पुत्र अपने राजपूत साथियों के साथ वीरगति को प्राप्त हुआ। महमुद मालवा और गुजरात की सम्मिलित सेना के साथ चित्तौड़ की ओर बढ़ा, गुजरात के सेना नायक आसफ खां ने महमुद को इस अभियान के लिए मना किया पर उसने उसकी सलाह को नहीं माना। महाराणा सांगा भी अपनी सेना के साथ आगे बढ़े और गागरोव के पास दोनों सेनाओं के मध्य भीषण युद्ध हुआ जिसमें महाराणा सांगा के विजयी की प्राप्ति हुई। मालवा की सेना के अनेक सेनानायक व हजारों सैनिक मारे गए। महमुद भी युद्ध में घायल होकर गिर पड़ा, जिसे महाराणा ने उठवा कर अपने खेमे में पहुंचाया और उसका उपचार किया। पराजित महमुद को चित्तौड़ ले जाया गया और बंदीगृह में डाल दिया गया। जहां पर तीन मास तक कैद में रहा। महमुद द्वारा क्षमा याचना करने पर महाराणा सांगा ने उसे मुक्त कर दिया व उसे उसे उसका राज्य भी लौटा दिया, सुल्तान ने अधीनता स्वरूप रत्न जड़ित मुकुट व स्वर्ण की कमरपेटी जो मालवा को शाही चिह्न थे महाराणा को भेंट किया। महाराणा के इस मानवीय गुण उदारता की मुस्लिम लेखकों ने बड़ी प्रशंसा की है परन्तु राजनीतिक परिणाम की दृष्टि से महाराणा की यह उदारता राजपूतों के लिए हानिकारक सिद्ध हुई। गुजरात का सुल्तान मुजफ्फर महाराणा सांगा से अपनी पराजय का बदला लेने के लिए लगातार प्रयासरत था। सेना को उत्साहित करने के लिए उसने उनका वेतन बढ़ा दिया, एक वर्ष का वेतन पेशगी में दिया। सोरठ के हाकिम मलिक अयाज को एक लाख की सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण के लिए भेजा गया, बीस हजार सैनिक के साथ किवामुल्मुल्क भी मलिक अयाज से आ मिला, मांडू का सुल्तान महमुद भी अपनी सेना के साथ इनसे आ मिला। गुजरात और मालवा की संयुक्त सेना और महाराणा सांगा के मध्य मंदसोर के पास यह युद्ध हुआ, जिसमें महाराणा सांगा को विजय प्राप्त हुई। कुछ मुस्लिम लेखक ये लिखते है कि मलिक अयाज बिना युद्ध किए महाराणा से संधि करके लौट गया था लेकिन सभी समकालीन ग्रंथ और ऐतिहासिक तथ्य सिद्ध करते है कि गुजरात और मालवा की सेना को युद्ध में पराजय का सामना करना पड़ा। यह युद्ध 1520 ई. में हुआ था। **(क्रमशः)**

रासला व दवाड़ा ग्रामवासियों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

जैसलमेर जिले में चल रहे नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत रासला गांव में 6 अक्टूबर को सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी किशन सिंह भादरिया के निर्देशन में ग्रामवासियों की बैठक आयोजित हुई जिसमें सभी ने नशा मुक्ति का संकल्प लिया। इससे पूर्व जसोड़ाटी क्षेत्र के भादरिया, सोढाकोर, चांधन, सगरा, जेठा, भैरवा, मांलीगड़ा, धायसर और डेलासर गांव में भी ऐसी बैठकों का आयोजन हो चुका है। दवाड़ा गांव में भी 9 अक्टूबर को बैठक का आयोजन हुआ जिसमें ग्रामवासियों द्वारा मृत्युभोज और नशे पर रोक का संकल्प लिया।

श्री हिम्मत राजपूत छात्रावास डीडवाना में भजन संध्या का आयोजन

श्री हिम्मत राजपूत छात्रावास डीडवाना में 5 अक्टूबर को 'एक शाम मां जगदम्बा के नाम' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें गाड़ोदा धाम के संत महावीर यति जी के सानिध्य में भजन संध्या का आयोजन हुआ। दिन में कन्या पूजन कार्यक्रम और प्रसादी का आयोजन भी किया गया। इस दौरान हिम्मत राजपूत छात्रावास मैनेजिंग कमेटी के पदाधिकारियों सहित भाजपा नेता जितेन्द्र सिंह जोधा, श्याम प्रताप सिंह रूवां, पूर्व छात्र नवरत्न सिंह, भरत सिंह, शक्ति सिंह, विक्रम सिंह, जब्बर सिंह, महेंद्र प्रताप सिंह, जितेन्द्र सिंह, शिवराज सिंह, पृथ्वी सिंह, वराहमिहिर सिंह आदि उपस्थित रहे। छात्रावास के पूर्व विद्यार्थियों के द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले इस कार्यक्रम में छात्रावास में स्थित माताजी के मंदिर में अखंड ज्योति जलाकर भजन संध्या का आयोजन किया जाता है।

अजय पाल सिंह बीजागुडा को पाली जिले में प्रथम स्थान

पाली जिले के बीजागुड़ा गांव के निवासी अजय पाल सिंह कांस्टेबल भर्ती - 2023 परीक्षा में पाली जिले की मेरिट में प्रथम स्थान पर चयनित हुए हैं। अजयपाल सिंह ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर कर रखे हैं।

अक्षय राज सिंह ने तीरंदाजी में जिला स्तर पर जीता स्वर्ण

केकड़ी में एमएलडी स्कूल में आयोजित 68वीं जिला स्तरीय तीरंदाजी प्रतियोगिता में केकड़ी जिले के घंटियाली गांव के निवासी अक्षय राज सिंह पुत्र विष्णु सिंह ने 17 वर्ष आयु वर्ग (छात्र) में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए स्वर्ण पदक जीता। अक्षय राज सिंह ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर भी कर रखे हैं।

भैरूपाल सिंह दासपां बने कांग्रेस सेवा दल के जिला संगठक

जालौर जिले के दासपां गांव के निवासी भैरूपाल सिंह को राजस्थान प्रदेश कांग्रेस सेवा दल का जालौर जिले का जिला मुख्य संगठक नियुक्त किया गया है। सेवादल के राज्य मुख्य संगठक हेम सिंह शेखावत द्वारा उनके नियुक्ति आदेश 7 अक्टूबर को जारी किए गए।

अशोक सिंह गणेश्वर ने पाया स्पार्टाथलोन मैराथन में चौथा स्थान

नीमकाथाना जिले के गणेश्वर (आगरी) गांव के निवासी व अंतर्राष्ट्रीय धावक अशोक सिंह ने ग्रीस में आयोजित हुई 246 किमी लंबी स्पार्टाथलोन मैराथन दौड़ में नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने 28 सितंबर को आयोजित स्पार्टा से एथेंस तक की इस दौड़ को 30 घंटे 14 मिनट में पूरा करते हुए 395 धावकों में चौथा स्थान प्राप्त किया। अशोक सिंह ने इससे पूर्व चंडीगढ़ के पंचकूला में ताऊ देवीलाल स्पोर्ट्स स्टेडियम में आयोजित 230 किमी लंबी टफमैन दौड़ में भी स्वर्ण पदक जीता था।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	मा.प्र.शि.	24.10.2024 से 30.10.2024 तक	पांचोटा, श्री नागणेचीजी माताजी मंदिर, तहसील-आहोर। **सम्पर्क सूत्र:** मदनसिंह थूंबा-94134-95628, खुमान सिंह दूदिया- 9982667270 देवीसिंह प्रतापगढ़-9001119848
02.	मा.प्र.शि.	24.10.2024 से 30.10.2024 तक	सनावड़ा, जैसलमेर।
03.	मा.प्र.शि.	25.10.2024 से 31.10.2024 तक	कल्याणपुर, बालोतरा।
04.	प्रा.प्र.शि.	26.10.2024 से 29.10.2024 तक	चाइल्ड हेवन पब्लिक स्कूल, रायकी, आसपुर
05.	मा.प्र.शि.	26.10.2024 से 31.10.2024 तक	दिवराला, अणंतसिंह राजपूत सभा भवन, तहसील. श्रीमोधपुर नीमकाथाना। श्रीमाधोपुर, रींगस, शाहपुरा, सीकर, चूरू, अलवर दांतारामगढ़, परबतसिर, मेड़ता से बस उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र:** जयसिंह दिवराला 94147-82772, विक्रमसिंह दिवराला 80589-35460
06.	प्रा.प्र.शि.	27.10.2024 से 30.10.2024 तक	रूपपुरा (कुचामन-तोषीणा मार्ग पर कुचामन से 6 किमीदूरी पर) **संपर्क सूत्र:** 8058995458, 9414422612, 9660990772
07.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	03.11.2024 से 06.11.2024 तक	बडोड़ा गांव, जैसलमेर।
08.	मा.प्र.शि.	04.11.2024 से 10.11.2024 तक	मालजीभी, पीपरिया, तहसील-जामकण्डोरना राजकोट।
09.	मा.प्र.शि. बालिका	05.11.2024 से 11.11.2024 तक	थोरड़ी, तहसील, जामकण्डोरना, राजकोट।
10.	प्रा.प्र.शि.	14.11.2024 से 17.11.2024 तक	शुभद्रा माता मंदिर, राजपूत सभा भवन, सर भाकर, ग्राम-सर तहसील-लूणी, जोधपुर। **सम्पर्क सूत्र:** 7568721139, 9413521625, 9351389504, 8875186838
11.	मा.प्र.शि.	30.12.2024 से 05.01.2025 तक	राजपूत समाज धर्मशाला, रामदेव मंदिर परिसर, कचनारा (नाहरगढ़), जिला-मंदसौर, मध्यप्रदेश (मंदसौर से नाहरगढ़-रुपणी-बिशनिया जाने वाली सड़क पर रामदेव मंदिर कचनारा पर उतरें) **नोट** - इस माध्यमिक शिविर में कम से कम दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर किए हुए स्वयंसेवक ही भाग ले सकेंगे।

गजेन्द्र सिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

रावण रूपी बुराई के अन्त के लिए राम जैसा संकल्प जगाएं: संघप्रमुख श्री

काणेटी

नाथावतपुरा

नागौर

(पेज एक से लगातार)

श्री क्षत्रिय युवक संघ भी उसी सामूहिक शक्ति के निर्माण की बात करता है। क्योंकि किसी एक व्यक्ति के शक्ति संपन्न होने से समाज शक्ति संपन्न नहीं होता, किसी एक व्यक्ति के धनी बन जाने से पूरा समाज धनी नहीं बन जाता लेकिन यदि पूरा समाज शक्ति संपन्न और धनी बन जाता है तो समाज का प्रत्येक व्यक्ति भी धनी और शक्ति संपन्न बनेगा ही। पूज्य श्री तनसिंह जी ने यही बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में हमें समझाई है। लेकिन हम अपने जीवन को देखें कि क्या हम समूह में रहते हुए भी अलग-अलग नहीं रहते। परिवार में, संस्था में हम साथ रहते हुए भी अलग-अलग रह रहे हैं और इसका खामियाजा समाज को भुगतना पड़ता है। उन्होंने आगे कहा कि हम विभिन्न संस्थाओं से जुड़ते हैं, उनमें कार्य करते हैं, यह बुरा नहीं है। हमारे भीतर जो सामाजिक भाव है, वही हमें इसके लिए प्रेरित करता है। लेकिन वहां जाने के बाद भी यदि हमारा स्वार्थ और अहंकार टकराता है तो फिर वहां जाने का कोई महत्व नहीं है। संगठन में समर्पण का सर्वाधिक महत्व है, अपना वर्चस्व दिखाने का नहीं। क्या राम की सेना में जो वानर, भालू आदि थे उन्होंने अपना वर्चस्व बनाने का प्रयास किया था? नहीं, उन्होंने राम के प्रति समर्पित होकर कार्य किया था और इसीलिए उनके द्वारा डाले गए राम नाम वाले पत्थर भी समुद्र में तैरने लगे। इसमें भले ही राम की महिमा हो लेकिन उनकी उस समर्पण की भावना का भी महत्व कम नहीं है। अपने शरीर को गीला करके उसपर मिट्टी लगाकर उस मिट्टी को पुल पर झाड़ कर सहयोग देने वाली गिलहरी की भावना भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। आज विजयादशमी के अवसर पर हमारे भीतर इस संकल्प और सहयोग की भावना को हमें जगाने का प्रयास करना है, यही संदेश हमें यहां से लेकर जाना है। कार्यक्रम में जयपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे। जयपुर में ही महाराणा प्रताप पार्क, गांधी पथ पश्चिम, वैशाली एस्टेट में भी विजयादशमी एवं महाराव शेखा जी की जयंती संयुक्त रूप से प्रताप शाखा द्वारा मनाई गई। स्थानीय पार्षद गजेंद्र सिंह चिराना और भाजपा नेता श्रवण सिंह बगड़ी ने कार्यक्रम को संबोधित किया और शेखाजी द्वारा नारीशक्ति के सम्मान के लिए लड़े गए 11 युद्धों का उल्लेख करते हुए कहा कि क्षत्रिय समाज में नारी का सम्मान सर्वोपरि रहा है। नरेंद्र सिंह निमेड़ा ने राव शेखा जी का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि शेखा जी ने अपने जीवन काल में 50 से अधिक युद्ध लड़े और 360 गांवों का सीमांकन किया। जयपाल सिंह मांडोता ने कार्यक्रम का संचालन किया। नागौर स्थित अमर राजपूत छात्रावास में भी शास्त्र व शस्त्र पूजन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें छात्रावास समिति के अध्यक्ष नारायण सिंह सूरजनियास, पार्षद शोभा कंवर, वार्डन भवर सिंह गोठड़ी आदि उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के नागौर प्रान्त प्रमुख उगम सिंह गोकुल सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। छात्रावास में नवरात्रि में प्रतिदिन विक्रम सिंह खारी के निर्देशन में सामूहिक यज्ञ भी किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के दक्षिण भारत प्रांत में बेंगलुरू मंडल द्वारा शास्त्र व शस्त्र पूजन का कार्यक्रम चामुंडा माता मंदिर राणासिंघपेट में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन विजय प्रताप सिंह रायरा ने किया। सुर सिंह ने अनुशासन और समय के महत्व के बारे में बताया। अर्जुन सिंह चौराऊ ने बताया कि यह दिन बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है अतः हमें भी अपने भीतर की बुराईयों को ढूंढकर उन्हें समाप्त करने की शुरूआत करनी चाहिए। सूर्यपाल सिंह बडू ने क्षेत्र में आयोजित होने वाले संघ के कार्यक्रमों व शाखाओं के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में सुजान सिंह चौराऊ, गजेंद्र सिंह भेसाणा, सुजान सिंह उचमत, जितेंद्र सिंह अनवाणा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मातृशक्ति भी उपस्थित रही। दुर्गा महिला विकास संस्थान नाथावतपुरा, सीकर में भी शाखा स्तर पर विजयादशमी का पर्व मनाया गया। फरीदाबाद के सेक्टर -8 में स्थित महाराणा प्रताप भवन में भी 12 अक्टूबर को दशहरा मिलन समारोह आयोजित हुआ जिसमें उपस्थित समाजबंधुओ द्वारा शास्त्र व शस्त्र का पूजन किया गया। सभी ने भगवान श्री राम के दिखाए सत्य व न्याय के मार्ग पर चलने की बात कही। इस अवसर पर फरीदाबाद शहर की सभी राजपूत संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। राजकुल सांस्कृतिक संस्था के अध्यक्ष नारायण सिंह शेखावत ने सभी का आभार ज्ञापित किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मध्य गुजरात संभाग में पांच स्थानों पर विजयादशमी मनाई गई। काणेटी, खोड़ा, शिहोर, समौ और मेघाणीनगर में आयोजित इन सभी कार्यक्रमों में स्वयंसेवकों ने स्थानीय समाज बंधुओ के साथ मिलकर यज्ञ किया एवं शास्त्र व शस्त्र का पूजन किया। काणेटी में श्री क्षत्रिय युवक संघ और श्री जय अंबे स्वयं सेवक संघ के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित हुआ। उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रांत के भेसाना में बालक व बालिका शाखा द्वारा विजयदशमी पर्व मनाया गया।

(इनके अतिरिक्त भी अनेक स्थानों पर विजयादशमी के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुए हैं जिनके समाचार अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।)

प्रताप पार्क, जयपुर

बैंगलुरू

चित्तौडगढ प्रांत में विशेष शाखाओं व सामूहिक यज्ञ का आयोजन

चित्तौडगढ प्रांत में 29 सितंबर को भुरकिया खुर्द (राड़ा जी बावजी) डूगलां में विशेष शाखा व सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ। जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ व पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया। कार्यक्रम में डूंगला क्षेत्र में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के आयोजन पर चर्चा की गई एवं संघशक्ति, पथप्रेरक के सदस्य भी बनाए गए। इसी दिन बालाजी मन्दिर रोलहेड़ा रोड़, चंदेरिया में भी विशेष शाखा एवं सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें नरेश सिंह पीलोद ने संघ व पूज्य श्री का परिचय दिया एवं आयुवान सिंह जी हुडील की पुस्तक 'ममता व कर्तव्य' से कहानी का पठन किया। 6 अक्टूबर को चंदेरिया में एफसीआई के पीछे स्थित अमर सिंह बनवाड़ा के निवास स्थान पर भी विशेष शाखा एवं

सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ। 6 अक्टूबर को ही राज दरबार वेडिंग स्टोर एंड कृष्णा ऑटोमोबाइल्स, बड़ी सादड़ी रोड, आसावरा माताजी में भी सामूहिक यज्ञ व विशेष शाखा का आयोजन किया गया।

गौरीगंज में हुआ क्षत्रिय कल्याण भवन का भूमि पूजन

उत्तर प्रदेश के अमेठी जिले के गौरीगंज तहसील मुख्यालय के वार्ड संख्या 21 में क्षत्रिय कल्याण भवन एवं महाराणा प्रताप की मूर्ति स्थापना के लिए भूमि पूजन कार्यक्रम 7 अक्टूबर को संपन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित सरेनी के पूर्व विधायक सुरेंद्र बहादुर सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप क्षत्रिय स्वाभिमान एवं अस्मिता के आदर्श प्रतीक पुरुष हैं। उनकी प्रतिमा सभी को देश प्रेम और स्वाभिमान की प्रेरणा देगी। क्षत्रिय कल्याण परिषद के अध्यक्ष संतबक्स सिंह ने कहा कि क्षत्रिय कल्याण भवन की स्थापना समाज व राष्ट्र निर्माण में सहयोगी और उच्च नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियों के केंद्र के रूप में की जा रही है। संस्था के संरक्षक फतेह बहादुर सिंह सहित अनेकों वक्ताओं ने कार्यक्रम में अपनी बात रखी।

आहोर, बालोतरा, जोधपुर व केकड़ी में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्यशालाओं का आयोजन

केकड़ी

आहोर

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की आहोर तहसील की दो दिवसीय कार्यशाला श्री सुरेश्वर महादेव मंदिर, पाण्डगरा में 5-6 अक्टूबर को संपन्न हुई। कार्यशाला में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी एवं कहा कि फाउंडेशन का प्रेरणास्रोत श्री क्षत्रिय युवक संघ है इसलिए कार्य में निरंतरता लाने के लिए हमारा संघ से जुड़े रहना आवश्यक है। नवीन ऊर्जा की प्राप्ति के लिए हमें संघ के शिविर एवं शाखाओं में भाग लेते रहना है। उन्होंने फाउंडेशन के गठन से लेकर अभी तक की यात्रा पर चर्चा की और बताया कि समाज में सकारात्मक कार्य की मांग एवं आवश्यकता बहुत अधिक है। उसे पूरा करने के लिए हमें स्वयं तो पूरी क्षमता से कार्य में जुटना ही है, साथ ही नए साथियों को भी निरंतर जोड़ते रहना होगा। सभी प्रतिभागियों ने विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा करते हुए अपने विचार रखे एवं क्षेत्र में फाउंडेशन के कार्यविस्तार को लेकर कार्ययोजना तैयार की। कार्यशाला में संघ के जालोर संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी सहित मोहब्बत सिंह धींगाना, खुमान सिंह दूदीया, अमर सिंह ऊण, राण सिंह साराना, हितेंद्र सिंह भदरू, हिंदू सिंह भाटा, गणपत सिंह चिपरवाड़ा, सीपी सिंह चरली, इंदर सिंह नारवना, उम्मेद सिंह ऊण, याघवेंद्र सिंह कानीवाड़ा आदि सहयोगी उपस्थित रहे। 5 अक्टूबर को फाउंडेशन की बालोतरा टीम की बैठक बालोतरा स्थित वीर दुगार्दास छात्रावास में आयोजित हुई। केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने संघ एवं इसके आनुषंगिक संगठनों के बारे में विस्तार से बताया। सभी प्रतिभागियों ने जिले में फाऊंडेशन की कार्ययोजना के क्रियान्वयन एवं आगामी गतिविधियों की रूपरेखा तैयार करने पर चर्चा की। बैठक में फाउंडेशन के बाड़मेर जिला प्रभारी नरेशपाल सिंह तेजमालता, चंदन सिंह चांदेसरा, स्वरूप सिंह थापन, विरम सिंह थोब, महेंद्र सिंह गोलियां, हिन्दू सिंह सिनेर, गणपत सिंह गोलियां, जितेंद्रपाल सिंह गुड़ानाल, विरम सिंह थोब, राण सिंह टापरा, विशन सिंह चांदेसरा आदि समाज बंधु उपस्थित रहे। 6 अक्टूबर को ही शाम को जोधपुर के पाल गांव में रामप्रताप सिंह पाल के आवास पर जोधपुर शहर के सहयोगियों की एक बैठक रखी गई जिसमें फाउंडेशन की गतिविधियों की चर्चा की गई एवं आगामी कार्ययोजना पर चर्चा की गई। इससे पूर्व 28-29 सितंबर को फाउंडेशन की अजमेर जिला टीम की दो दिवसीय कार्यशाला केकड़ी स्थित छाबड़िया फोर्ट होटल में संपन्न हुई जिसमें रेंवत सिंह पाटोदा के निर्देशन में प्रतिभागियों द्वारा विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा की गई एवं अजमेर जिले में फाउंडेशन की गतिविधियों हेतु कार्ययोजना तैयार की गई। कार्यशाला में फाउंडेशन के अजमेर-केकड़ी जिला प्रभारी देशराज सिंह लिसाडिया सहित भरत सिंह सापुण्दा, गिरधर सिंह छाबड़िया, घनश्याम सिंह नागोला, देवेंद्र सिंह हरपुरा, हनुवंत सिंह सावर, भंवर सिंह खिरिया, विक्रम सिंह नयाबास, धर्मेंद्र सिंह खीरिया, विक्रम सिंह बिलिया, सत्यवीर सिंह अरवड़ आदि समाज बंधु उपस्थित रहे।

राजपूत छात्रावास दौसा में नवीन पुस्तकालय का शुभारंभ

राजपूत छात्रावास दौसा में नवनिर्मित पुस्तकालय का शुभारंभ 6 अक्टूबर को किया गया। इस अवसर पर श्री राजपूत सभा दौसा की मासिक सभा का भी आयोजन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने कहा कि समाज की युवा पीढ़ी में शिक्षा के प्रति रुचि जगाने के साथ ही उन्हें अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण एवं सुविधा उपयुक्त करने के दृष्टिकोण से पुस्तकालयों का बहुत अधिक महत्व है। अतः समाजबंधुओ द्वारा छात्रावास में इस पुस्तकालय का निर्माण सराहनीय है। राजपूत सभा के विभिन्न पदाधिकारी एवं स्थानीय समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

दीपांशी और अनुष्का ने जीते पदक, राज्य स्तर पर हुआ चयन

केकड़ी जिले के खिरियां गांव की निवासी दीपांशी नरूका पुत्री धर्मेंद्र सिंह ने राजकीय देवनारायण बालिका आवासीय छात्रावास केकड़ी में आयोजित 14 वर्ष आयु वर्ग की जिला स्तरीय 10 मीटर ओपन राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के फलस्वरुप दीपांशी का चयन राज्य स्तर पर आबू रोड में आयोजित होने वाली प्रतियोगिता के लिए भी हुआ है। इसी प्रतियोगिता में खिरियां गांव की ही अनुष्का कंवर पुत्री हिम्मत सिंह नरूका ने भी 17 वर्ष आयु वर्ग में कांस्य पदक जीता जिसके फलस्वरूप उनका चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ है।

रतन सिंह कानीवाड़ा बने भारतीय किसान संघ के जिलाध्यक्ष

जालौर जिले के कानीवाड़ा गांव के निवासी रतन सिंह को भारतीय किसान संघ की जालौर जिला इकाई का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। जालौर स्थित मलकेश्वर महादेव मठ में आयोजित हुए जिला कार्यकारिणी चुनावों में उन्हें सर्वसम्मति से जिलाध्यक्ष चुना गया।

(पृष्ठ एक का शेष)

समारोहपूर्वक...

छात्रावास संचालक हमीर सिंह जोगा ने मेवाड़ की स्वतंत्रता के संघर्ष में राणा पूंजा के सहयोग से अवगत करवाया और आने वाली पीढ़ी द्वारा राणा पूंजा के पद चिन्हों पर चलकर समाज व देश को गौरव प्रदान करने की बात कही। ओसियां स्थित राजपूत छात्रावास परिसर में महाराजा श्री गज सिंह शिक्षण संस्थान के तत्वावधान में पूंजा जी की जयंती मनाई गई। संस्थान के अध्यक्ष गोपाल सिंह भलासरिया ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि चालुक्य राजवंश के सोलंकी शासक राणा पूंजा ने आदिवासी समाज की सेना बनाकर हल्दीघाटी के युद्ध में अप्रतिम पराक्रम दिखाया था। उनके जीवन से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। कार्यक्रम में हुकम सिंह पड़ासला, योगेंद्र सिंह खेतासर, महेंद्र सिंह अनवाना, राजेंद्र सिंह शेखावत, मोहन सिंह तिंवरी, नागेश्वर सिंह बारा, समंदर सिंह तिंवरी, जितेंद्र सिंह ओसियां, दिलीप सिंह खेतासर, भंवर सिंह भीमसागर, करणी सिंह उदावत, देवी सिंह शेखावत सहित अनेकों समाज बंधु उपस्थित रहे एवं पूंजा जी को पुष्पांजलि अर्पित की। श्री क्षत्रिय युवक संघ के ओसियां प्रांत प्रमुख पदम सिंह ओसियां भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उदयपुर के झाड़ोल क्षेत्र के ओगणा में स्थित राणा पूंजा महाविद्यालय में आयोजित राणा पूंजा जयंती कार्यक्रम में प्रताप सिंह तलावदा ने बताया कि पानरवा के हरराज सोलंकी को महाराणा उदय सिंह ने राणा की उपाधि प्रदान की थी। हरराज सोलंकी के पौत्र राणा पूंजा जी थे जिन्होंने हल्दीघाटी-खमनोर युद्ध के समय चंदावल में ढाई सौ भील योद्धाओं का नेतृत्व करते हुए युद्ध में भाग लिया था। बाड़मेर जिले में महाबार पीथल में स्थित खींवज माता मंदिर में जय राजपूताना संघ के तत्वावधान में पूंजा जी की जयंती मनाई गई। गिरधर सिंह उण्डखा ने पूंजा जी का विस्तृत जीवन परिचय प्रस्तुत किया। भीम सिंह सोलंकी ने इतिहास विकृतिकरण को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इतिहास और महापुरुषों को राजनीतिक स्वार्थपूर्ति का साधन नहीं बनाया जाना चाहिए। कार्यक्रम में स्थानीय समाजबंधु एवं संस्था के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कोटा स्थित महाराव भीम सिंह राजपूत छात्रावास में भी श्री राजपूत कर्मचारी संघ के तत्वावधान में पूंजा जी की जयंती मनाई गई। छात्रावास के सचिव वीरेंद्र सिंह ने पूंजा जी द्वारा हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की सहायता का वर्णन किया।

उत्साहपूर्वक...

श्री अमर क्षत्रिय (राजपूत) सभा द्वारा भी महाराजा हरि सिंह पार्क में जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुघ, राजपूत सभा के पूर्व अध्यक्ष नारायण सिंह सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह सहित अनेक राजनेताओं ने भी एडिशन पार्क पहुंचकर महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। डोगरा सदर सभा द्वारा जम्मू के डोगरा हॉल स्थित सभा भवन में सामाजिक न्याय दिवस के रूप में जयंती मनाई गई। सभा के अध्यक्ष गुलचैन सिंह चरक ने महाराजा हरि सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बताया। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के आदिल मन्हास, ऋषिकेश सिंह परमार ने भी अपने विचार रखे। कठुआ राजपूत सभा के तत्वावधान में कठुआ में हरिसिंह जयंती के उपलक्ष में वाहन रैली का आयोजन किया गया। रामलीला मैदान से प्रारंभ होकर शहीदी चौक, कॉलेज मार्ग, परशुराम चौक होते हुए रैली पुनः रामलीला मैदान पहुंची जहां सभा का आयोजन कर महाराजा हरि सिंह के जनहित में किए गए कार्यों को स्मरण करके उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। सांबा और उधमपुर में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए।

सूर्यकरण सिंह आकोला गढ़ को मातृशोक

श्रीमती लक्ष्मी कुंवर

श्री क्षत्रिय युवक के स्वयंसेवक सूर्यकरण सिंह आकोला गढ़ के माताजी **श्रीमती लक्ष्मी कुंवर** शक्तावत धर्मपत्नी श्री खुमाण सिंह आकोला गढ़ का देहावसान 5 अक्टूबर 2024 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

सूरत शाखा में मनाया अधिकतम संख्या दिवस

दक्षिण गुजरात सम्भाग के सूरत शहर प्रान्त में पृथ्वीराज शाखा का अधिकतम संख्या दिवस 6 अक्टूबर को मनाया गया जिसमें सूरत शहर में रहने वाले सैकड़ों स्वयंसेवक एवं समाज बंधु उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के सम्भाग प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा और राजस्थान राजपूत समाज सूरत के अध्यक्ष गोविंदसिंह दहीमथा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

कानपुर में शास्त्र व शस्त्र पूजन कार्यक्रम का आयोजन

उत्तरप्रदेश के कानपुर में अर्रा रोड स्थित शकुंतला लॉन में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के तत्वावधान में शस्त्र एवं शास्त्र पूजन का कार्यक्रम 6 अक्टूबर को आयोजित हुआ। संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. कुंवर हरिवंश सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी को मिलकर क्षत्रिय समाज की एकता के लिए कार्य करना है। राष्ट्रीय महामंत्री राघवेंद्र सिंह एवं जिलाध्यक्ष मनोज भदौरिया ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में संस्था के पदाधिकारी एवं अन्य गणमान्य समाजबंधु शामिल हुए।

अलवर में क्षत्रिय कार्मिक संगठन की बैठक संपन्न

अलवर जिला मुख्यालय पर क्षत्रिय कार्मिक संगठन की बैठक 6 अक्टूबर को आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता सेवानिवृत्त एडीईओ भूपेंद्र सिंह नरूका ने की। बैठक में कमल सिंह राठौड़, डॉ. पवन सिंह शेखावत, दीवान सिंह राजावत सहित अनेकों समाजबंधुओ ने अपने विचार रखते हुए कहा कि अपने कार्मिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए हमें समाज के प्रति अपने दायित्व को भी निभाना चाहिए।

धनोप शक्तिपीठ में सामूहिक कन्या पूजन समारोह का आयोजन

शाहपुरा जिले में स्थित धनोप शक्तिपीठ में राजपूत समाज द्वारा 7 अक्टूबर को सामूहिक कन्या पूजन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें पारंपरिक रीति से 551 कन्याओं का पूजन किया गया। बालिका शिक्षा के महत्व का संदेश देने के उद्देश्य से बालिकाओं को पाठ्य सामग्री भी भेंट की गई। धनोप शक्तिपीठ प्रन्यास अध्यक्ष सत्येंद्र सिंह राणावत ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन बालिकाओं की शिक्षा और भविष्य को लेकर समाज की सजगता का प्रमाण है। बालिकाओं को शिक्षित एवं संस्कारित बनाकर ही समाज को कुरीतियों से मुक्त करने में सफलता मिल सकती है। कन्या पूजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं है बल्कि समाज में नारी शक्ति के महत्व को प्रतिष्ठित करने का भी उपक्रम है। शाहपुरा जिला कलेक्टर राजेंद्र सिंह शेखावत के मुख्य आतिथ्य में संपन्न इस कार्यक्रम में शाहपुरा राज परिवार के जय सिंह शाहपुरा, फूलिया थाना अधिकारी देवराज सिंह सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। गोपाल सिंह कादेड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय सहयोगी एवं साथी स्वयंसेवक

श्री भैरूपाल सिंह दासपां

को कांग्रेस सेवादल के

जालोर जिला मुख्य संगठक (जिलाध्यक्ष) बनाने पर

हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

अर्जुनसिंह देलदरी | मदन सिंह थुम्बा | नाहर सिंह जाखड़ी | महोब्बत सिंह धींगाना

डूंगर सिंह पुनासा | महेंद्र सिंह कारोला | गणपतसिंह भवरानी | ईश्वर सिंह सांगाणा

गजेंद्रसिंह जाविया | देवी सिंह तेतरोल | पृथ्वीराज सिंह पांचला

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org